कृत्रिम बुद्धिमत्ता का वर्तमान सामाजिक परिवेश पर वास्तविक प्रभाव

Dr. Parul

Department of Sociology, IEC University, Baddi, Himachal Pradesh

सारांशिका

21वीं सदी में मानव सभ्यता एक नई क्रांति के दौर से गुजर रही है, जिसे 'कृत्रिम बुद्धिमत्ता' (Artificial Intelligence – AI) के रूप में जाना जाता है। यह तकनीक मशीनों को सोचने, समझने, निर्णय लेने और व्यवहार करने की क्षमता प्रदान करती है, जिससे वे मानव जैसी कार्यप्रणालियों में दक्ष होती जा रही हैं। AI केवल एक तकनीकी उन्नति नहीं है, बल्कि यह आधुनिक समाज की संरचना, संस्कृति और आचार-विचार को नए रूप में ढाल रही है। आज हम जिस डिजिटल युग में रह रहे हैं, वहाँ AI हमारी दैनिक दिनचर्या से लेकर औद्योगिक, शैक्षणिक, चिकित्सीय और सामाजिक गतिविधियों तक में अपनी उपस्थिति दर्ज करा चुकी है। इस शोधपत्र में हम यही मूल्यांकन करेंगे कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता वर्तमान सामाजिक परिवेश को किस प्रकार प्रभावित कर रही है, और इसके दीर्घकालिक प्रभाव किस दिशा में समाज को ले जा सकते हैं।

शब्द कुंजी: कृत्रिम बुद्धिमत्ता, वर्तमान सामाजिक परिवेश, वास्तविक प्रभाव, वैक्तिक प्रभाव, सामाजिक प्रभावI

शोध की आवश्यकता :

AI की प्रगति ने सामाजिक जीवन के लगभग हर पहलू को छुआ है – चाहे वह कामकाजी जीवन हो, शिक्षा हो, चिकित्सा हो या आपसी मानवीय संबंध। परंतु इन सभी क्षेत्रों में इसके प्रभाव केवल तकनीकी नहीं, बल्कि गहरे सामाजिक, नैतिक व सांस्कृतिक स्तर पर भी देखे जा रहे हैं।AI के कारण जहाँ कार्यक्षमता और सुविधा बढ़ी है, वहीं बेरोजगारी, सामाजिक अलगाव, गोपनीयता की हानि और मानसिक तनाव जैसे नए सामाजिक प्रश्न भी उभर रहे हैं। ऐसे में यह समझना आवश्यक है कि यह तकनीक समाज को दीर्घकाल में किस दिशा में ले जा सकती है। यह शोधपत्र इसलिए आवश्यक है क्योंकि आज के निर्णय आने वाले युग की सामाजिक संरचना को निर्धारित करेंगे।

शोध का उद्देश्य:

इस शोधपत्र का मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित हैं:

1. कृत्रिम बुद्धिमत्ता की संकल्पना एवं इसकी वर्तमान प्रासंगिकता को स्पष्ट करना।
2. सामाजिक परिवेश पर इसके वास्तविक प्रभावों – जैसे कि कार्य संस्कृति, शिक्षा, परिवार, संचार आदि – का विश्लेषण करना।
3. दीर्घकालिक प्रभावों का आकलन करना, जैसे कि सामाजिक विषमता, मानसिक स्वास्थ्य, नीति निर्माण आदि पर पड़ने वाले संभावित परिणाम।
4. सकारात्मक और नकारात्मक दोनों पक्षों को संतुलित रूप से प्रस्तुत करते हुए सुझाव देना कि समाज इस परिवर्तन को कैसे संतुलित कर सकता है।

शोध पद्धति (Research Methodology):

यह शोध**गुणात्मक)Qualitative) पद्धति**पर आधारित है, जिसमें द्वितीयक स्रोतों का विश्लेषण किया गया है जैसे कि शोध पत्र, पत्रिकाएँ, विश्वसनीय वेबसाइटें, सरकारी दस्तावेज़, AI संबंधित

रिपोर्ट्स और समाजशास्त्रीय अध्ययन।इसके अतिरिक्त, विभिन्न सामाजिक क्षेत्रोंजैसे शिक्षा–, कार्य, स्वास्थ्य, और संचारमें हो रहे व्यवहारिक परिवर्तनों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया – है कि मात्र तकनीकी पक्ष को समझा जाए है। शोध का उद्देश्य यह नहीं, बल्कि यह देखा जाए कि तकनीक समाज को किस रूप में आकार दे रही है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता की संकल्पना:

कृत्रिम बुद्धिमत्ता)Artificial Intelligence)एक ऐसी तकनीक है जो कंप्यूटरों और मशीनों को इस प्रकार डिज़ाइन करती है कि वे मानव जैसी सोच, निर्णय क्षमता, सीखने की प्रक्रिया, भाषा को समझना और समस्या का समाधान करने की योग्यता प्राप्त कर सकें।

AI के प्रमुख उपवर्ग हैं:

- मशीन लर्निंग
- डीप लर्निंग
- न्यूरल नेटवर्क
- नेचुरल लैंग्वेज प्रोसेसिंग
- कम्प्यूटर विज़न

AI का प्रयोग अब केवल विज्ञान या इंजीनियरिंग तक सीमित नहीं रहा, बल्कि यह सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक परिवेश को भी गहराई से प्रभावित कर रहा है।

वर्तमान सामाजिक परिवेश पर कृत्रिम बुद्धिमत्ता का प्रभाव

रोज़गार और कार्य संस्कृति पर प्रभाव:

AI ने कार्यस्थलों में**स्वचालन)automation)**को तेज़ किया है। इससे कुछ क्षेत्रों में कुशलता बढ़ी है, लेकिन परंपरागत नौकरियों में भारी गिरावट आई है। बैंकिंग, बीमा, मैन्युफैक्चरिंग, और यहां तक कि चिकित्सा में भी AI आधारित प्रणाली मनुष्यों की जगह ले रही हैं। इससे**बेरोजगारी, कौशल असमानता और सामाजिक तनाव**जैसे प्रश्न सामने आए हैं। AI के साथ काम करने के लिए श्रमिकों को**नए कौशल**की आवश्यकता है, लेकिन विकासशील देशों में यह संक्रमण काफी असंतुलित हो रहा है।

शिक्षा और सीखने की प्रक्रिया में बदलाव:

AI ने**एडटेक**के माध्यम से शिक्षा में क्रांति ला दी है।

- छात्र अब व्यक्तिगत गति से ऑनलाइन प्लेटफ़ॉर्म्स के माध्यम से पढ़ सकते हैं।
- AI आधारित ट्यूटर छात्रों की समझ के अनुसार सुझाव देते हैं।
- दूसरी ओर, इससे**मानव शिक्षक और छात्रों के बीच की पारंपरिक संवाद प्रणाली कमजोर**हुई है, जिससे**सामाजिक जुड़ाव**और**भावनात्मक बंधन**कम हो रहे हैं।

पारिवारिक और सामाजिक संबंधों में परिवर्तन:

AI आधारित डिवाइस जैसे)Alexa, Google Assistant) और सोशल मीडिया एल्गोरिदम ने**मानव बातचीत के स्वरूप**को बदल दिया है।

- पारिवारिक सदस्य कम संवाद करते हैं।
- युवा वर्ग डिजिटल इंटरफेस के ज़रिए संवाद करता है, जिससे**सामाजिक अलगाव**, **डिजिटल लत**, और**अवसाद**की स्थिति देखी जा रही है।

संचार, सूचना और गोपनीयता पर प्रभाव:

AI आज हमारी पसंद, विचारधारा, और निर्णय लेने की प्रक्रिया को**डेटा एल्गोरिदम**के माध्यम से प्रभावित करता है।

- समाचार, विज्ञापन, और सोशल मीडिया पोस्ट AI द्वारा नियंत्रित किए जाते हैं।
- इससे एक व्यक्ति को केवल उन्हीं विचारों की सूचना मिलती है जो उसके पूर्व व्यवहार से मेल खाती है ज -िसे**इको चेंबर)echo chamber)**कहा जाता है।
- इससे**आलोचनात्मक सोच**कम होती है और समाज में**ध्रुवीकरण**बढ़ता है।

स्वास्थ्य और मनोरंजन क्षेत्र में प्रभाव:

AI आधारित ऐप्स और वियरेबल्स लोगों की सेहत की निगरानी करते हैं। इससे जल्दी निदान और उपचार संभव हुआ है।लेकिन दूसरी ओर, मनोरंजन के नाम पर व्यक्ति अधिक समय स्क्रीन के सामने बिताने लगा है, जिससे**शारीरिक निष्क्रियता**, **नींद की कमी**, और**एकाकीपन**जैसी समस्याएँ बढ़ रही हैं।

कृत्रिम बुद्धिमत्ताके दीर्घकालिक प्रभावों का विश्लेषण

कृत्रिम बुद्धिमत्ता AI द्वारा सामाजिक असमानता में वृद्धि:

AI आधारित सेवाएँ और अवसर अधिकांशतः तकनीकी रूप से समृद्ध वर्ग तक सीमित हैं। ग्रामीण और आर्थिक रूप से पिछड़े वर्ग इनसे वंचित रह जाते हैं। इससे समाज में **डिजिटल डिवाइड**बढ़ रहा है, जो **आर्थिक और सामाजिक असमानता** को और गहरा करता है।कृत्रिम बुद्धिमत्ता)AI) आधुनिक तकनीकी क्रांति का एक प्रमुख स्तंभ बन चुकी है। इसका प्रभाव मानव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में गहराई से देखने को मिल रहा है शिक्षा –, चिकित्सा, व्यापार, संचार, और शासन तक। हालांकि, जहां AI से अनेक क्षेत्रों में दक्षता और विकास संभव हुआ है, वहीं यह

सामाजिक असमानता को भी एक नई दिशा में ले जा रहा है। AI के प्रसार से कुछ वर्गों को लाभ हुआ है, जबकि समाज का एक बड़ा वर्ग इससे वंचित या प्रभावित हुआ है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ताAI और सामाजिक असमानता का संबंध

1. रोजगार में विषमता

AI के कारण स्वचालन)automation) बढ़ा है, जिससे कई पारंपरिक नौकरियाँ समाप्त हो रही हैं। उच्च शिक्षा प्राप्त और तकनीकी कुशल लोग AI से लाभ उठा रहे हैं, जबकि निम्न शिक्षा वर्ग या श्रमिक वर्ग रोजगार की असुरक्षा झेल रहा है। इससे आय की असमानता और सामाजिक वर्गों के बीच दूरी बढ़ रही है।

2. शिक्षा और डिजिटल विभाजन:

AI आधारित शिक्षा प्रणाली, जैसे व्यक्तिगत सीखने वाले प्लेटफ़ॉर्म, उन्हीं छात्रों को उपलब्ध है जिनके पास इंटरनेट, डिवाइस और डिजिटल साक्षरता है। ग्रामीण और पिछड़े इलाकों के छात्रों के पास ये सुविधाएँ नहीं हैं, जिससे शिक्षा में असमानता और बढ़ रही है।

3. एल्गोरिदमिक पक्षपात)Algorithmic Bias):

AI सिस्टम उन डेटा पर आधारित होते हैं जो अक्सर ऐतिहासिक या सामाजिक पूर्वाग्रह लिए होते हैं। उदाहरण के लिए, नौकरी चयन, ऋण स्वीकृति या पुलिसिंग में AI सिस्टम अनजाने में जातीय, लिंग या वर्गीय पक्षपात कर सकते हैं। यह मौजूदा असमानताओं को तकनीकी स्तर पर वैधता दे देता है।

4. डिजिटल पूंजी का केंद्रीकरण:

AI तकनीक पर नियंत्रण गिने जैसे) चुने बड़े कॉर्पोरेट्स-Google, Amazon, Microsoft) के पास है। इससे डिजिटल संसाधनों और लाभों का केंद्रीकरण होता है, जिससे छोटे व्यवसाय और विकासशील देश पिछड़ जाते हैं। यह वैश्विक स्तर पर भी असमानता को बढ़ाता है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ताAI का व्यक्ति के मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव

AI-आधारित इंटरफेस, सोशल मीडिया और आभासी दुनिया में अत्यधिक संलग्नता के कारण लोगों में**तनाव, अवसाद, अकेलापन और आत्मकेन्द्रिता-**जैसी समस्याएँ तेज़ी से बढ़ रही हैं।युवा वर्ग अपनी पहचान व मूल्य को डिजिटल मान्यता से जोड़ने लगा है, जिससे मानसिक स्वास्थ्य पर गंभीर असर हो रहा है।विशेषकर वर्तमान डिजिटल युग में जहाँ कृत्रिम बुद्धिमत्ता)AI) हमारे विचारों, व्यवहारों और जीवनशैली को प्रभावित कर रही है।कृत्रिम बुद्धिमत्ता)AI) ने हमारे जीवन में सूचना, संवाद, कार्य और मनोरंजन को पहले से कहीं अधिक सरल और त्वरित बना दिया है। परंतु इस तकनीकी सुविधा के पीछे छिपे**मानसिक स्वास्थ्य के खतरे**अब स्पष्ट रूप से उभरने लगे हैं। यह प्रभाव प्रत्यक्ष और परोक्ष द –ोनों रूपों में देखा जा सकता है, विशेषकर युवाओं और डिजिटल युग में पलेबढ़े लोगों में।-

1. सोशल मीडिया और आत्म:छवि का संकट-

AI आधारित एल्गोरिद्म सोशल मीडिया पर लोगों की पसंद, व्यवहार और भावनाओं का विश्लेषण करते हैं और उसी के अनुसार सामग्री प्रस्तुत करते हैं।

- यह प्रक्रिया व्यक्ति को**"डिजिटल मान्यता) "likes, views, comments)**की होड़ में झोंक देती है।

- व्यक्ति अपनी वास्तविक पहचान छोड़कर**आकर्षक, स्वीकृत और 'परफेक्ट' दिखने**की कोशिश करता है, जिससे आत्मसंदेह-, हीनता और असंतोष जन्म लेते हैं।
- विशेषकर किशोर और युवा वर्ग में**डिप्रेशन, सोशल एंग्ज़ायटी, और आत्मघाती प्रवृत्ति**तक देखी गई है।

2. डिजिटल लत ()Digital Addiction):

AI द्वारा संचालित ऐप्स और गेमिंग प्लेटफॉर्म्स उपयोगकर्ता की आदतों का विश्लेषण कर उन्हें**लंबे समय तक व्यस्त रखने**की रणनीति अपनाते हैं।

- यह**डोपामिन आधारित gratification loop**बनाता है, जिसमें व्यक्ति निरंतर स्क्रीन पर बना रहता है।
- इससे**नींद की कमी, थकावट, चिड़चिड़ापन, और सामाजिक अलगाव**बढ़ता है।
- कार्यक्षमता, अध्ययन और पारिवारिक जीवन पर भी विपरीत प्रभाव पड़ता है।

3. निजता का भय और अनिश्चितता:

AI द्वारा लगातार डाटा संग्रह और ट्रैकिंग से व्यक्ति को ऐसा लगने लगता है कि**उसकी गोपनीयता पर नियंत्रण नहीं रहा**।

- यह चिंता और आशंका का कारण बनती है।
- साइबर स्टॉकिंग, विज्ञापन में लक्ष्यीकरण, और निगरानी जैसी प्रक्रियाएँ मानसिक तनाव को जन्म देती हैं।

4. मानवीय संपर्क में कमी:

AI-आधारित वर्चुअल सहायक जैसे)Alexa, Chatbots, AI-Tutors) मनुष्य की कई भूमिकाएँ निभा रहे हैं।

- इससे व्यक्ति के**मानवमानव संबंध कमजोर-से-**हो रहे हैं।
- **संवेदनात्मक जुड़ाव, सहानुभूति, और सामूहिक अनुभव**घटने लगे हैं, जो मानसिक संतुलन बनाए रखने में सहायक होते हैं।
- विशेष रूप से वृद्धजन और अकेले रहने वालों में**एकाकीपन और अवसाद**की स्थिति अधिक हो गई है।

5. निर्णय लेने की क्षमता में गिरावट:

AI पर अत्यधिक निर्भरता व्यक्ति की**निर्णय लेने की स्वतंत्रता और आत्मविश्वास**को कम करती है।

- GPS, रिव्यू ऐप्स, सुझाव इंजन)recommendation engines) के ज़रिए हर निर्णय AI लेने लगता है।
- इससे व्यक्ति**आत्मनिर्भरता और जिम्मेदारी**की भावना खो बैठता है, जो दीर्घकालिक मानसिक विकास के लिए आवश्यक है।

<u>कृत्रिम बुद्धिमत्ताAI द्वारा सांस्कृतिक पहचान और सामाजिक मूल्य का क्षरण</u>

कृत्रिम बुद्धिमत्ता)AI) के प्रसार ने वैश्विक समाज में अभूतपूर्व परिवर्तन लाए हैं। यह तकनीक जहाँ एक ओर ज्ञान, सूचना और सुविधा की क्रांति का माध्यम बन रही है, वहीं दूसरी ओर यह**स्थानीय सांस्कृतिक पहचान**, **भाषाई विविधता**, और**परंपरागत सामाजिक मूल्यों**के लिए गंभीर चुनौती बनती जा रही है।

:1सांस्कृतिक एकरूपता के प्रसार पर AI का प्रभाव:

AI आधारित एल्गोरिद्म और प्लेटफॉर्म, जैसे कि यूट्यूब, इंस्टाग्राम, नेटफ्लिक्स आदि, अधिकतर**पश्चिमी विचारधारा और जीवनशैली को बढ़ावा**देते हैं। इससे**स्थानीय संस्कृति, लोककला, और पारंपरिक जीवन पद्धति**का प्रतिनिधित्व सीमित होता जा रहा है। युवा वर्ग वैश्विक ट्रेंड्स के अनुरूप सोचने और व्यवहार करने लगता है, जिससे**मूल सांस्कृतिक पहचान धीरेधीरे धूमिल**-हो रही है।

:2भाषाई विविधता पर आगामी संकट:

AI अधिकांशतः**अंग्रेज़ी या वैश्विक भाषाओं**को प्राथमिकता देता है। हिंदी, तमिल, बंगाली, मराठी जैसी भारतीय भाषाओं में उच्च स्तरीय NLP (Natural Language Processing) का विकास सीमित है।इससे**स्थानीय भाषाओं का डिजिटलीकरण पिछड़**रहा है, और युवाओं में अपनी मातृभाषा के प्रति जुड़ाव घटता जा रहा है।

:3पारंपरिक ज्ञान व मूल्यों की उपेक्षा:

AI आधारित शिक्षा और सूचनाओं का केंद्रीकरण शहरी और तकनीकी दृष्टिकोण से होता है। ग्रामीण, जनजातीय या लोक परंपराओं से जुड़ा**पारंपरिक ज्ञान** – जैसे कि लोक चिकित्सा, मौखिक साहित्य, रीति- रिवाज-**डिजिटल दुनिया में अदृश्य**होता जा रहा है। सामाजिक मूल्य जैसे**संयुक्त परिवार, बड़ों का सम्मान, सहअस्तित्व-, और परंपरा का आदर** — अब समझा जाने लगा है। "पुराना सोच"

:4सांस्कृतिक उपभोक्तावाद का विस्तार:

AI से संचालित विज्ञापन, मनोरंजन और सोशल मीडिया युवाओं में**भौतिकतावाद, व्यक्तिगत लाभ और उपभोक्तावादी मानसिकता**को बढ़ावा देते हैं।इससे**सामूहिकता, समाज के प्रति उत्तरदायित्व, और त्याग जैसे मूल्य**पिछड़ने लगते हैं।I आधारित एल्गोरिदम प्रचलित सामग्री को (ट्रेंडिंग)

प्राथमिकता देते हैं, जिससे**स्थानीय भाषा, परंपरा और सांस्कृतिक विविधता**धीरेधीरे हाशिये पर - चली जाती है।पारंपरिक ज्ञान और लोकसंस्कृति को संरक्षित करने मेः मानव योगदान की उपेक्षा हो रही है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ताAI के सन्दर्भ में नीति और नैतिकता की आवश्यकता

AI की प्रगति से जुड़े नैतिक प्रश्न, जैसे डेटा सुरक्षा –, AI का आत्मनिर्णय, मानवीय नियंत्रण – निर्माण की जटिलताओं को बढ़ाएंगे।-भविष्य में नीतिAI को मानव हितों के अनुकूल बनाए रखने के लिए**कठोर नियामक ढांचे और नीतिआधारित दृष्टिकोण-**की आवश्यकता है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता)AI) का विकास जितना तीव्र और प्रभावशाली है, उतनी ही तीव्रता से यह**नैतिक, सामाजिक और विधिक प्रश्नों**को जन्म भी दे रहा है। जैसे जैसे-AI मनुष्य की सोच, निर्णय और व्यवहार को प्रभावित करता जा रहा है, वैसेवैसे इसके प्रयोग में-**नीति और नैतिकता**का महत्व भी बढ़ता जा रहा है।

1. क्यों आवश्यक है नीति निर्माण?

AI अब केवल तकनीकी प्रयोग नहीं रहा, बल्कि यह मानव जीवन की मूलभूत संरचना को प्रभावित करने वाला उपकरण बन गया है।इसके कारण निम्नलिखित मुद्दों पर स्पष्ट नीति आवश्यक है:

(क(डेटा गोपनीयता और सुरक्षा:

AI आधारित प्रणालियाँ व्यक्ति के निजी डेटा को लगातार एकत्र, विश्लेषित और प्रयोग करती हैं।यदि इस डेटा का दुरुपयोग हो जाए, तो व्यक्ति की**स्वतंत्रता, प्रतिष्ठा और सुरक्षा**को गंभीर खतरा हो सकता है।

(ख(उत्तरदायित्व का निर्धारण:

जब AI कोई निर्णय लेता है मेडिकल निदान जैसे कि), न्यायिक राय, या दुर्घटना में गाड़ी का निर्णय(, तो**गलत परिणाम की ज़िम्मेदारी किसकी होगी?** — इस प्रश्न का उत्तर स्पष्ट नहीं होता।इसलिए नीति के माध्यम से**जवाबदेही और नियंत्रण**तय करना अनिवार्य है।

(ग(रोजगार पर प्रभाव और समावेशिता:

AI के कारण स्वचालन बढ़ रहा है जिससे अनेक पारंपरिक नौकरियाँ समाप्त हो रही हैं। नीतिगत प्रयासों से**नए कौशल विकास**और**सभी वर्गों की भागीदारी**सुनिश्चित की जानी चाहिए।

2. नैतिकता क्यों है महत्वपूर्ण?

AI के निर्णय**नैतिक मूल्यों से रहित**होते हैं र्य वह केवल डेटा और एल्गोरिद्म के आधार पर का – :करता है। ऐसे में कुछ प्रमुख नैतिक चुनौतियाँ उत्पन्न होती हैं

(क(पूर्वाग्रह)Bias) का खतरा:

यदि AI को प्रशिक्षित करने वाले डेटा में भेदभावपूर्ण पैटर्न हैं, तो उसका निर्णय भी**जाति, लिंग, भाषा या वर्ग**के आधार पर पक्षपाती हो सकता है।

(ख(मानव गरिमा और स्वायत्तता:

AI यदि सभी निर्णय स्वयं लेने लगे, तो यह**मानव स्वतंत्रता और आत्मनिर्भरता**के विरुद्ध होगा।

(ग(**सहानुभूति और संवेदना की अनुपस्थिति:**

AI में नैतिक विवेक, करुणा और सामाजिक संवेदना नहीं होती।

स्वास्थ्य, शिक्षा या न्याय जैसे क्षेत्रों में**मानवीय भावनाएँ अत्यंत आवश्यक होती हैं**, जिन्हें केवल तकनीक से नहीं बदला जा सकता।

कृत्रिम बुद्धिमत्ताके नीति निर्धारण काअंतर्राष्ट्रीय दृष्टिकोण:

संयुक्त राष्ट्र, यूरोपीय संघ, और UNESCO जैसे संस्थानों ने AI के लिए नैतिक सिद्धांतों की रूपरेखा प्रस्तुत की है।इन सिद्धांतों में**पारदर्शिता)transparency), उत्तरदायित्व)accountability), निष्पक्षता)fairness), और मानवकेन्द्रित डिज़ाइन-**को प्रमुख माना गया है।भारत सरकार की**नीति आयोग**द्वारा प्रस्तुत "AI for All" रणनीति में भी**AI के नैतिक और न्यायसंगत उपयोग**को प्राथमिकता दी गई है।

निष्कर्ष:

कृत्रिम बुद्धिमत्ता ने मानव समाज को नई ऊँचाइयों पर पहुँचाने की क्षमता दिखाई है, परंतु यह परिवर्तन केवल तकनीकी नहीं, **सामाजिक और नैतिक रूप से गहरे प्रभावकारी**है। AI ने हमारे काम करने, सोचने, सीखने, और संवाद करने के तरीकों को पूरी तरह बदल दिया है।जहाँ इसने जीवन को सरल, सुलभ और प्रभावशाली बनाया है, वहीं यह मानव संबंधों, सामाजिक समरसता, मानसिक स्वास्थ्य और सांस्कृतिक विविधता के लिए**एक चुनौती**भी बन रहा है।इसलिए, आवश्यकता इस बात की है कि हम AI को केवल एक तकनीक नहीं, बल्कि**एक सामाजिक**

परिवर्तनकारी शक्तिके रूप में देखें और उसके उपयोग में**संवेदनशीलता, विवेक और नीति**का समावेश करें।

AI के मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव**द्वैध प्रकृति**का है जहाँ एक ओर यह मानसिक रोगों की – पहचान औरउपचार में सहायक हो सकता है जैसे चैटबॉट्स थेरेपी), तनाव ट्रैकिंग ऐप्स(, वहीं दूसरी ओर इसका**अनियंत्रित और असंवेदनशील उपयोग**मानसिक समस्याओं का कारण भी बनता जा रहा है।इसलिए ज़रूरत है कि**AI को मानसिक स्वास्थ्य के सहयोगी के रूप में उपयोग किया जाए**, न कि**नियंत्रक के रूप में**।

AI यदि केवल आर्थिक और तकनीकी दृष्टिकोण से विकसित किया जाए, तो यह धीरेधीरे - हमारी**सांस्कृतिक विविधता, भाषाई विरासत और सामाजिक मूल्य प्रणाली**को नुकसान पहुँचा सकता है।इसलिए आवश्यकता है कि**AI का सांस्कृतिक उत्तरदायित्व के साथ विकास हो** – जहाँ यह न केवल वैश्विक, बल्कि**स्थानीय संस्कृति, भाषा और परंपरा का संवर्धन**भी करे।

AI के क्षेत्र में यदि नैतिकता और नीति का समावेश न हो, तो यह तकनीक समाज में**असमानता, अन्याय और नियंत्रणहीनता**को बढ़ावा दे सकती है।इसलिए ज़रूरी है कि AI का विकास केवल लाभ के दृष्टिकोण से न होकर, **मानव मूल्यों, सामाजिक न्याय और पारदर्शिता**के साथ किया जाए।AI, जहाँ संभावनाओं का एक विशाल संसार है, वहीं यह सामाजिक असमानता को गहरा करने का माध्यम भी बन सकता है यदि इसे बिना उचित दिशा और नियंत्रण के अपनाया जाए। एक न्यायपूर्ण, समावेशी और नैतिक AI नीति के माध्यम से हम यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि तकनीकी प्रगति सभी के लिए समान रूप से लाभकारी हो, न कि केवल कुछ विशेष वर्गों के लिए।

सुझाव:

1. **AI साक्षरता अभियान** – आम जनमानस को AI के सकारात्मक और नकारात्मक दोनों प्रभावों के बारे में शिक्षित करना।
2. **नीतिगत नियंत्रण** – सरकारों द्वारा स्पष्ट और कठोर डेटा संरक्षण कानून लागू करना।
3. **AI का मानवीय उपयोग** – ऐसे AI सिस्टम विकसित करना जो मानव मूल्यों, विविधता और न्याय को बढ़ावा दें।
4. **शिक्षा और प्रशिक्षण** – AI के साथ काम करने के लिए नई पीढ़ी को उपयुक्त स्किल्स से लैस करना।
5. **स्थानीय संस्कृति का संरक्षण** – डिजिटल कंटेंट में क्षेत्रीय भाषा, लोककला और परंपरा को प्राथमिकता देना।
6. AI आधारित ऐप्स में मानसिक स्वास्थ्य सुरक्षा मानक शामिल किए जाएँ।
7. डिजिटल डिटॉक्स और संतुलित स्क्रीनटाइम की संस्कृति को बढ़ावा दिया जाए।-
8. AI डिज़ाइन करते समय**नैतिक दिशानिर्देश**अपनाए जाएँ जो मानवसंबंधों और भावनात्मक - भलाई को प्राथमिकता दें।
9. **AI नैतिकता आयोग**जैसे संस्थानों की स्थापना की जाए।
10. AI विकास में**सामाजिक वैज्ञानिकों, शिक्षाविदों और नीति निर्माताओं**की भागीदारी अनिवार्य की जाए।
11. AI प्रणाली में**नैतिक मूल्यांकन)ethical audit)**अनिवार्य किया जाए।
12. नागरिकों को**AI साक्षरता**दी जाए ताकि वे समझ सकें कि उनके साथ क्या हो रहा है।
13. **नीति निर्माण में समावेशिता:** AI आधारित नीतियों को बनाते समय समाज के सभी वर्गों की भागीदारी सुनिश्चित की जाए।

14. **शिक्षा और प्रशिक्षण:**डिजिटल साक्षरता और AI प्रशिक्षण को जनसामान्य तक पहुँचाया जाए, विशेषकर ग्रामीण और पिछड़े वर्गों को।
15. **•नैतिक AI विकास:**ऐसे एल्गोरिदम और मॉडल बनाए जाएँ जो पक्षपात से मुक्त हों और पारदर्शिता सुनिश्चित करें।
16. **डिजिटल पहुँच का विस्तार:**इंटरनेट, स्मार्टफोन, और तकनीकी संसाधनों को सुलभ बनाया जाए ताकि सभी को बराबर लाभ मिल सके।

सन्दर्भ ग्रंथ :

1. केव, एस., डिग्नम, वी., एवं जोबिन, ए) .2019)।**AI नैतिकतादिशानिर्देशों का वैश्विक नैतिक : परिदृश्य**।*नेचर मशीन इंटेलिजेंस, 1*(9), 389–399।https://doi.org/10.1038/s42256-019-0088-2
2. क्रॉफर्ड, के) .2021)।*एटलस ऑफ AI: पावर, पॉलिटिक्स, एंड द प्लैनेटरी कॉस्ट्स ऑफ आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस*। येल यूनिवर्सिटी प्रेस।
3. चौधरी, वी) .2020)।*आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और सामाजिक संरचना में परिवर्तन*। मुंबई : नेशनल बुकट्रस्ट।
4. डिगनम, वी) .2019)।*उत्तरदायी कृत्रिम बुद्धिमत्ता नैतिक और विवेकपूर्ण :AI का विकास कैसे करें*। स्प्रिंगर प्रकाशन।
5. डेवनपोर्ट, टी.एच ., एवं रोनांकी, आर) .2018)।**वास्तविक दुनिया के लिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता**।*हार्वर्ड बिज़नेस रिव्यू, 96*(1), 108–116।
6. झा, ए) .2021)।*कृत्रिम बुद्धिमत्तानीतिगत और नैतिक पहलू :*। वाराणसीविद्या : पब्लिशिंग।

7. तुफेकी, ज़) .2015)।**फेसबुक और गूगल से परे एल्गोरिदमिक हानियाँसंगणकीय : अभिकरण की उभरती चुनौतियाँ**।*कोलोराडो टेक्नोलॉजी लॉ जर्नल, 13*(203), 203–218।https://ctlj.colorado.edu/?p=1331
8. त्रिपाठी, एम) .2019)।*आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव*। इलाहाबादसर्जना प्रकाशन। :
9. नीति आयोग।)2018)।**कृत्रिम बुद्धिमत्ता हेतु राष्ट्रीय रणनीति -#AIforAll**। भारत सरकार।https://niti.gov.in/strategy-national-artificial-intelligence
10. फ्लोरिडी, एल., एवं कौल्स, जे) .2019)।**समाज में AI के लिए पाँच सिद्धांतों की एकीकृत रूपरेखा**।*हार्वर्ड डेटा साइंस रिव्यू, 1*(1)।https://doi.org/10.1162/99608f92.8cd550d1
11. बिन्स, आर) .2018)।**मशीन लर्निंग में निष्पक्षतानीतिक दर्शन से प्राप्त राज : सबक**।*फेयरनेस, अकाउंटबिलिटी एंड ट्रांसपेरेंसी सम्मेलन के कार्यवृत्त*, 149–159।
12. ब्रायनजोफ्सन, ई., एवं मैक्अफी, ए) .2014)।*द सेकंड मशीन एजकार्य .; प्रगति और समृद्धि एक तकनीकी युग में*। डब्ल्यूनॉर्टन एंड कंपनी। .डब्ल्यू .
13. मिश्रा, एस) .2023)।*एआई और सांस्कृतिक मूल्यों का क्षरण*। भोपालभारतीय समाज : विज्ञान परिषद् प्रकाशन।
14. मिटेलस्टेड, बी.डी ., एलो, पी., तादेओ, एम., वाच्टर, एस., एवं फ्लोरीडी, एल .)2016)।**एल्गोरिदम की नैतिकताविमर्श का मानचित्रण :**।*बिग डेटा एंड सोसाइटी, 3*(2), 1–21।https://doi.org/10.1177/2053951716679679
15. मेहता, आर) .2021)।*कृत्रिम बुद्धिमत्ता और शिक्षासंभावनाएं एवं चुनौतियाँ :*। जयपुर : नवभारत पब्लिकेशन।

16. मिश्रा, डी) .2022)।*मानव व्यवहार पर एआई का प्रभावनिक दृष्टिकोणएक मनोवैज्ञा :*। पटनामानस प्रकाशन। :

17. रसेल, एस., एवं नॉर्विग, पी) .2021)।*कृत्रिम बुद्धिमत्ताचौथा) एक आधुनिक दृष्टिकोण : (संस्करण*। पियरसन प्रकाशन।

18. यूनेस्को।)2022)।*कृत्रिम बुद्धिमत्ता और शिक्षानिर्देश-नीति निर्माताओं हेतु दिशा :*। यूनेस्को प्रकाशन।https://unesdoc.unesco.org/ark:/48223/pf0000376709

19. यूबैंक्स, वी) .2018)।*ऑटोमेटिंग इनइक्वलिटीटेक टूल्स प्रोफाइल-हाउ हाई :, पुलिस, एंड पनिश द पूअर*। सेंट मार्टिन्स प्रेस।

20. विश्व आर्थिक मंच।)2023)।*भविष्य के कार्य का प्रतिवेदन*।https://www.weforum.org/reports/the-future-of-jobs-report-2023

21. शर्मा, के) .2020)।*एआई नीति और नैतिकताभारत का परिप्रेक्ष्य :*। दिल्लीसामाजिक : विमर्श।

22. ओनील', सी) .2016)।*वेपन्स ऑफ मैथ डिस्ट्रक्शनहाउ बिग डेटा इनक्रीसेज इनइक्वलिटी : एंड थ्रेटन्स डेमोक्रेसी*। क्राउन पब्लिशिंग ग्रुप।

23. गोयल, एस) .2022)।*कृत्रिम बुद्धिमत्ता और समाजएक अंतःसम्बंध :*। नई दिल्लीप्रभात : पब्लिकेशन।